सूरह अल इमरान – 3

ये सूरत मदनी है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- **शुबहात और सह्वात के मुखाबले में साबित खदमी का मुज़ाहिरा|**

- 1-120 आयत तक फिकरी साबित खदमी, यानी शुबहात के खिलाफ इस्तेखामत पर रौशनी डाली गयी|
- आयत 121 से आखिर तक दाखिली सिबात खदमी, यानी सह्वात के खिलाफ इस्तेखामत पर रौशनी डाली गयी|
- ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल है न के बेटे, ये सवाल अल इमरान का मरकज़ी हदफ़ है| 27
- सूरह अल इमरान का एक हदफ़ ये भी है के अल्लाह की इबादत करो, न के मख्लूख की, यानी अल इमरान की इबादत मत करो, बलके खालिख ए अल इमरान की इबादत करो|
  ---------- (3:64), ---------- (3:59)
- वफ्द ए नजरान और घज्वाये उहद ये दोनों वाखियात इन्हें दो यानी फिकरी व दाखिली सिबात खदमी पर मुन्तखब होते है| (सहीह बुखारी:4380)
- इस सूरत में साबित खदमी से रोकने वाली चीज़ों की तरफ भी इशारा किया गया है, यानी हुब्बुस सहवात| (आयत-14,155,165)
- इस सूरत का नाम अल इमरान है, यानी इमरान की बीवी और बेटी, ये दोनों साबित खदमी की आला मिसाल है|
- मरयम अलैहिस्सलाम इबादत और इफ्फत में साबित खदमी की आला मिसाल है और उनकी वालिदा दीन ए इस्लाम की खिदमत में साबित खदमी की आला मिसाल है, जैसा के उन्होंने परवरदिगार से इल्तेजा की:
  ---------- (3:35) 28

27 खतल अल अज़्हार फी कसफुल असरार लिस सुयूती:549
28 मज़ीद तफसील के लिए तफसीर इब्ने कसीर देखें|

बाज़ मौज़ूआत

1. कुरआन, तौरात और इंजील के मुनज्ज़ल मिनल्लाह होने का इसबात| (1-4)
2. अल्लाह की खुदरत के दलाइल और उसकी तौहीद का बयान| (5-6)
3. कुरआन में मुहकम और मुशाबा दोनों आयतें है और लोग इस में दो फरीख हो गये| (7)
4. रसिखीन ए इल्म अल्लाह की तरफ रुजू होते है इसका तज़किरह| (8-9)
5. काफिरों का अंजाम| (10-13)
6. लोगों का सहवत के ज़रिये धोका खा जाना और दुनियावी सहवत की खिस्में और मोमिनों को बेहतर चीज़ की तरफ तवज्जो दिलाना| (14-17)
7. अल्लाह की वहदानियत, सिर्फ दीन ए इस्लाम के मख्बूल होने और अहले किताब पर इत्माम ए हुज्जत वघैरह का तज़किरह| (18-20)
8. काफिरों का अम्बिया और सालिहीन को खतल करने का बदला| (21-22)
9. अहले किताब की तबियत और फिर वईद| (23-25)
10. हर चीज़ में अल्लाह की खुदरत का तज़किरह| (26-27)
11. काफिरों के साथ मुआमलात का हुकुम और साथ ही आखिरत की सज़ा से डराया गया| (28-30)

12. इतात करने वाले मोमिनों का बदला अल्लाह की मुहब्बत| (31-32)
13. बाज़ चुनिन्दा अम्बिया के खिस्से खुसूसन मरयम अलैहिस्सलाम का खिस्सा बयान किया गया| (33-37)
14. ज़करिय्या अलैहिस्सलाम का खिस्सा| (38-41)
15. ईसा अलैहिस्सलाम की सिफात और उनके मुआजिज़ात का बयान| (42-51)
16. हवारिय्यीन का मौखिफ और ईसा अलैहिस्सलाम की मदद करना| (52-53)
17. ईसा अलैहिस्सलाम के ताल्लुख से यहूदियों की साज़िश, अल्लाह का ईसा अलैहिस्सलाम को ऊपर उठालेना और खियामत के दिन फरिखीन की जज़ा का बयान| (54-58)
18. उन लोगों की तरदीद जो ईसा अलैहिस्सलाम को बशर मानने से इनकार करते है| (59-64)
19. उन लोगों के ज़ाम की तरदीद जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यहूदी या नसरानी कहते है| (65-68)
20. मुसलमानों के खिलाफ अहले किताब की साज़िश के वो उनको हिदायत के बाद गुमराह कर देना चाहते है| (65-68)
21. अहले किताब की तबियतें और उनके लिए सख्त वईद का बयान| (75-78)
22. अम्बिया पर अहले किताब के इफ्तेरा और उनकी तरदीद| (79-80)
23. अम्बिया से अहद लिया गया के वो मुहम्मद ﷺ पर ईमान लायेंगे, इसके बावजूद अहले किताब ने इससे एराज़ किया और इस बात का बयान के दीन ए इस्लाम के अलावा और कोई दीन मख्बूल नहीं है| (81-85)
24. जो इल्म के बावजूद गुमराह हो जाए उसकी हिदायत की उम्मीद नहीं की जा सकती और इसकी सज़ा का बयान| (86:89)
25. कुफ्फार की खिस्में| (90-91)
26. जो पसंदीदा चीज़ है उसको खर्च करके नेकी हासिल करने का बयान| (92)
27. इस्राईल (याखूब) अपने नफ्स पर बाज़ चीज़ें हराम कर लिए थे और उनके सिलसिले में यहूदियों के अखीदे की तरदीद| (93-95)
28. बैतुल्लाह का मुखाम और हज की फ़र्ज़ियत का बयान| (96-97)
29. अहले किताब के कुफ्र और उनके अल्लाह की राह से रोकने पर तरदीद| (98-99)
30. मोमिनों के लिए नसीहतें अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और नेकी का हुकुम और बुराई से रोकने का बयान और खैर ए उम्मत का बयान वघैरह| (100-110)
31. अहले किताब और उनमे से जो मोमिन हो गए उनकी हालत का बयान| (111-115)
32. काफिरों के आमाल परागंदा ज़र्रों की तरह ज़ाए हो जायेंगे| (116-117)
33. मोमिनों से काफिरों की दुश्मनी और निफाख का तज़किरह| (118-120)
34. घज्वे बदर और उहद के ताल्लुख से आयात| (121-129)
35. मोमिनों के लिए जहन्नम से बचने और जन्नत में दाखिल होने के असबाब का बयान| (130-136)
36. मोमिनों का इम्तेहान ज़ालिमों के ज़रिये और उस पर सब्र करने का सवाब| (137-141)
37. जो घज्वे उहद में शरीक हुए उनको नसीहत के जन्नत सख्त मेहनत और सब्र के ज़रिये हासिल की जाती है| (142-143)

38. रसूल के बशर होने का ताकीदी बयान और आप ﷺ को अल्लाह के हुकुम से मौत आना यखीनी है, जैसा के तमाम इंसानों को आती है| (144-145)
39. साबेखा अलैहिमुस्सलाम और उनके हवारिय्यों की जिहाद में साबित खदमी और अल्लाह का उनसे वादे का तज़किरह| (146-148)
40. काफिरों की इतात से डराया गया और ये के अल्लाह को दोस्त बनाया जाए और काफिरों के अंजाम का तज़किरह| (149-151)
41. जंग ए उहद में मुसलमानों पर मुसीबत के असबाब का तज़किरह| (152-155)
42. मुनाफिखीन की हालत का बयान और उनसे मुशाबिहत इख्तियार करने की मुमानियत| (156)
43. मोमिनो को जिहाद की तरघीब दिलाई गयी| (157-158)
44. नबी ﷺ की सिफात और अखलाख का तज़किरह| (164-168)
45. घज्वये उहद में मुसलमानों पर मुसीबत के असबाब और शुहदा का मुखाम व मरतबा का तज़किरह| (169-174)
46. मोमिन पर ज़रूरी है के औलिया ए शैतान से ना डरें और न उनके कुफ्र की शिद्दत से ग़मघीन न होने की नसीहत| (175-179)
47. दुनिया और आखिरत में बखीली का अंजाम, यहूदियों ने अपने आप को अल्लाह से घनी समझा और उन पर अल्लाह की वईद| (180-184)
48. दुनिया फना होने वाली और इम्तेहान की जगह है और सब्र की फ़ज़ीलत| (185-186)
49. अहले किताब की तबियत, उनका अहद शिकनी करना, उनके बाज़ सिफात और अंजाम का बयान| (187-188)
50. अल्लाह की वहदानियत और उसकी खुदरत का बयान| (189-190)
51. उलुल अलबाब और उनका काइनात और अल्लाह की मख्लूख में तदब्बुर व तफ़क्कुर का तज़किरह| (191-195)
52. कुफ्फार की खुव्वत, उनके घल्बे से धोका खाने की मुमानियत और कुफ्फार का अंजाम| (196-197)
53. मुत्तखीन और उनकी जज़ा का बयान और सब्र का हुकुम| (198-200)

बाज़ अस्बाख

1. इस सूरत में साबित खदम रहने के ज़राए बताये गए:
    - अल्लाह की तरफ रुजू करना| (आयत नंबर:8,35,38,192-194)
    - इबादत, इस सूरत में अब्बाद का भी तज़किरह है, मसलन: मरयम अलैहिस्सलाम (37), ज़करिय्या अलैहिस्सलाम (39) और इसी तरह मोमिनीन (193)|
    - दावत – (आयत नंबर:104-110), 29
    - वहेज़ मख्सद ए हयात| (191)
    - भाई चारगी| (103-105)
2. ईसाइयों के सवालात का भर पूर जवाब दिया गया खास तौर से ईसा अलैहिस्सलाम के इन्सान और बशर होने को साबित किया गया, जिसकी वाज़ेह और आसान दलील ये है के वो मरयम

अलैहिस्सलाम के बेटे और मरयम इमरान की बीवी के बतन से है, लिहाज़ा जिसका सिलसिला नसब हो इसके बशर होने में क्या तामुल है?

3. काइनात में घौर व फिकर करना भी इबादत है – आयत:191, तदब्बुर ए काइनात और discovery of creation से discovery of creator तक पहुंचना ज़रूरी है| 31
4. अल्लाह हमेशा से ज़िन्दा और खायम व दायम है, इस पर कोई चीज़ मख्फी नहीं, ज़मीन में न ही आसमान में|
5. मोमिनों को कुरआन के मुहक्कम आयात पर अमल करना और मुतशाबिहा आयात पर ईमान रखना ज़रूरी है|
6. मुतशाबा आयात इम्तेहान के लिए है|
7. जिसे लोग चाहते है वो दुनियावी मता है और आखिरत खैर है जो हमेशा रहने वाली है|
8. अहले किताब का जहन्नम में न जाने का दावा झूठा है|
9. मर्द व औरत में तख्लीखी फर्ख है, लेकिन जिंस ए रिजाल मुत्लख, जिंसे निसा पर फ़ज़ीलत वाले नहीं|
10. इख्तेलाफात को हल करने के लिए खुर्रा अंदाजी कर सकते है|
11. ईसा अलैहिस्सलाम अपनी मान के बशरत थे|
12. अल्लाह जैसे चाहे तखलीख कर सकता है|
13. ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों के पास नए दीन को लेकर नहीं आये थे|
14. ईसा अलैहिस्सलाम अपना दिफ़ा करने से आजिज़ थे जो उनकी बशरियत और कमज़ोरी की दलील है|
15. यहूद व नसारा अपने दावे में झूठे है के इब्राहीम अलैहिस्सलाम यहूदी या नसरानी थे|
16. इब्राहीम अलैहिस्सलाम से और उनके दीन से ज़्यादा खरीब अहले इस्लाम है|
17. बहुत से अहले किताब हसद करते हुए मुसलमानों को हख से गुमराह कर रहे है|
18. झूठी खसम खाना बड़े गुनाहों में से है|
19. अहले किताब मुसलमानों को साज़िशों में डाल कर गुमराह करते है, पस जो कोई उनका साथ दे वो उन्ही में से है|
20. नेकी का देना और बुराइ से रोकना हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है|
21. हख वाज़ेह होने के बाद अहले किताब की तरह इख्तेलाफ करना बहुत बुरा है|
22. अल्लाह बन्दों से बेनियाज़ है, बन्दों की सज़ाओं से बेनियाज़ है, वो तो उनकी भलाई चाहता है|
23. अल्लाह पर ईमान रखने और अम्र बिल मारूफ व नहीं अनिल मुनकर करते रहने में ही उम्मत की भलाई है|
24. अल्लाह अहले किताब की ना फरमानियों और ना शुक्रियों से घज़बनाक है|
25. मुनाफिखीन से हमेशा मुहतात रहना चाहिए|
26. जो मुसलमान की तकलीफ पर खुश होता है वो मुनाफिख है|
27. मुनाफिख मुसलमानों से हमेशा कीना बुघ्ज़ व अदावत रखते है|
28. ताखत के ऐतेबार से हमेशा मुसलमानों को तय्यार रहना चाहिए|
29. नफ्सियाती शिकस्त बहुत बड़ी शिकस्त है जिससे कुल्ली तौर पर इन्सान शिकस्त खा जाता है|

30. दुश्मन से जीतने के लिए तय्यारी, खौफ से दूरी, तफर्रुख व इख्तेलाफ से दूरी और अल्लाह पर तवक्कल ज़रूरी है|
31. अल्लाह की इतात से ही उसकी तौफीख और रहमत नसीब होती है|
32. गुनाहों पर इस्रार कबीरह गुनाह है|
33. मुवाखज़ा उस गुनाह पर होगा जिसको वो जानते हुए कर गुज़रता है|
34. जन्नत को मुश्किलात से घेर दिया गया, मशख्खत के बघैर उस तक नहीं पहुँच सकते|
35. तमाम अम्बिया बशर थे और बशरी तखाज़े उन पर आया करते थे|
36. ग़ैर मुस्लिमीन से दिली दोस्ती रखना दुनिया व आखिरत का खसारा है|
37. जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता, वो ऐश परस्ती और खौफ की ज़िन्दगी गुज़ारता है|
38. इख्तेलाफ, धोका बाज़ी, मासियत और दुनियावी मुहब्बत ये सब हज़ीमत के असबाब में से है|
39. मुसीबत के वख्त ऊंघ आना अमन व सलामती की अलामती है|
40. शैतान अहले ईमान को दुनिया की मुहब्बत में डाल कर गुमराह करता है|
41. हसरत, नदामत और मायूसी, ये अल्लाह का अज़ाब है जो ना फरमानों को ला हख होता है|
42. रहमत और हमदरदी एक अच्छे leader की अलामत है|
43. सख्ती और जल्द बाज़ी आदमी को नफरत पर उभारती है|
44. हर ख़ास व आम मुआमलात में मशवरा करना इस्लामी शिआर है|
45. रिश्वत व खियानत हराम है|
46. हर वो शख्स जो अल्लाह के दुश्मनों की मदद करता है और मुसलमानों के खिलाफ है उसने ईमान के मुखाबले में कुफ्र को खरीद लिया है|
47. मोमिन मुश्किल वख्त में अल्लाह से गिड गिडाये और ये कहे: हस्बुनल्लाह व नेमल वकील|
48. ईमान और तख्वा एक दूसरे के लाज़िम व मल्जूम है|
49. बखीली की सज़ा इन्सान दुनिया में भी पाता है|
50. मौत हर नफ्स को आएगी, चाहे इन्सान हो या जिन्न या के फ़रिश्ता|
51. अखलमंद कभी भी अल्लाह को नहीं भूलता|
52. मुसलमान हर लम्हा इल्म व अमल से अल्लाह का खुर्ब हासिल करे|
53. शरियत के अहकाम में हिसाब व किताब में मर्द व औरत दोनों बराबर है|
54. दुनिया कितनी भी मिल जाए, आखिरत के मुखाबले में बहुत ही कम है|
55. अंजाम से इबरत लेनी चाहिए|
56. अल्लाह की राह में सब्र करने का बड़ा मुखाम व अजर है|
57. सरहद की पहरेदारी का बदला बहुत अज़ीम है|
58. सब्र, साबित खदमी और तख्वा कामयाबी की कुंजी है|

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- सूरह बखरह नुमाया इखामत ए हुज्जत का नमूना है और आले इमरान 'रद्द ए शुबहात' का नमूना है|
- सूरह बखरह और आले इमरान का मुश्तरिक मौज़ू 'इसबात ए रिसालत' है|

- सूरह फातिहा में अल्लाह की हम्द व सना, सूरह बखरह और आले इमरान में 'इसबात ए रिसालत|'
- ----------की मुकम्मल तशरीह, नसारा के अखाइद और उनके शुबहात का रद्द, सूरह आले इमरान में बयान किया गया है|

हिफ्ज़ व तदब्बुर आयात व हदीस बराए तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

आयत 1: खाल ताला: (----------) (अल इमरान:104)
तरजुमा: तुम में से एक जमात ऐसी होनी चाहिए जो भलाई की तरफ बुलाये और नेक कामों का हुकुम करे और बुरे कामों से रोके और यही लोग फलाह व नजात पाने वाले है|

आयत 2: खाल ताला: (----------) (अल इमरान:110)
तरजुमा: तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है के तुम नेक बातों का हुकुम करते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह ताला पर ईमान रखते हो| अगर अहले किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर था, इनमे ईमान वाले भी है लेकिन अक्सर फासिख है|

आयत 3: खाल ताला: (----------) (अल इमरान:19)
तरजुमा: बे शक अल्लाह ताला के नज़दीक दीन ए इस्लाम ही है और अहले किताब ने अपने पास इल्म आ जाने के बाद आपस की सरकशी और हसद की बिना पर ही इख्तेलाफ किया है और अल्लाह ताला की आयातों के साथ जो भी कुफ्र करे अल्लाह ताला उसका जल्द हिसाब लेने वाला है|

आयत 4: खाल ताला: (----------) (अल इमरान:85)
तरजुमा: जो शख्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करे, उसका दीन खाबिले खबूल न किया जायेगा और वो आखिरत में नुख्सान पाने वालों में होगा|

हदीस 1: (----------) (सहीह अल तरघीब:2893)
तरजुमा: हम पहले ज़लील खौम थे, अल्लाह ताला ने इस्लाम के ज़रिये इज्ज़त बख्शी, पस जब कभी हम इज्ज़त उसके अलावा तलाश करेंगे, जिसके ज़रिये अल्लाह ने हमें इज्ज़त बख्शी थी, तो अल्लाह हमें ज़लील व रुसवा कर देंगे|

हदीस 2: (----------) (अल बुखारी:2493)
तरजुमा: नबी ए करीम ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह की हुदूद पर खायम रहने वाले और इसमें घुस जाने वाले (यानी खिलाफ करने वाले) की मिसाल ऐसे लोगों की सी है जिन्होंने एक कश्ती के सिलसिले में खुरा डाला| जिसके नतीजे में बाज़ लोगों को कश्ती के ऊपर का हिस्सा और बाज़ को नीचे का| पस जो लोग नीचे वाले थे, उन्हें (दरिया

से) पानी लेने के लिए ऊपर वालों को हम कोई तकलीफ न दें| अब अगर ऊपर वाले भी नीचे वालों को मन मानी करने देंगे तो कश्ती वाले तमाम हलाक हो जायेंगे और अगर नीचे वालों का हाथ पकड़ लेंगे तो ये खुद भी बचेंगे और सारी कश्ती भी बच जायेगी|